अलंकार द्वितीय वर्ष
कथ्थक नृत्य

पूर्णांक : 500, न्यूनतम : 225,
शास्त्र : 200, न्यूनतम : 70
क्रियात्मक : 300 (क्रिया 200 + मंच प्रदर्शन: 100) न्यूनतम : 155

शास्त्र
प्रथम प्रश्नपत्र
अंक- 100 न्यूनतम : 35

१. मंदिरों में नृत्य की प्राचीन परम्परा का इतिहास ।
२. नट, नर्तक, तौर्यत्रिकम् शब्दों की परिभाषा ।
३. कथ्थक नृत्य प्रस्तुति में संरचनाओं के नये प्रयोग और प्रवाह ।
४. आधुनिक रंग प्रस्तुति का तकनीकी ज्ञान जैसे कि रचना आलेख- संगीत संयोजन नृत्य निर्देशन - वेशभूषा रंगभूषा नेपथ्य तथा प्रकाश सज्जा आदि ।
५. नाट्यशास्त्रानुसार निम्नलिखित की व्याख्या :-

1) दर्शनविधि 8 2) भृकुटि भेद 7
3) अधर भेद 6 4) गरदन के प्रकार 9
5) हस्तमुद्रा के प्रकार 64 6) वक्षस्थल के प्रकार 5
7) कमर के प्रकार 5 8) पाव के कार्य 5

6) नाट्य शास्त्र का उद्गम
7) भाव तथा रस का संबंध, भाव, विभाव, अनुभाव तथा सात्त्विक भाव का नृत्य में प्रयोग ।
8) संत सूरदास की किन्हीं दो काव्य रचनाओं के आधार पर नृत्य के संदर्भ का विवेचन ।
9) किसी भी एक ताल में आमद, कमाली चक्करदार परन, फरमाईशी परन, तिहाई (जो 2 आवृत्ति से कम न हों) तिस्त्र जाति व मिस्र जाति परन या चक्कदार परन, तथा कवित्त आदि की लिपिबध्द क्रिया ।

द्वितीय प्रश्न पत्र

अंक - 100 न्यूनतम : 35

१. कथक नृत्य के मुख्य तीन घरानों (लखनऊ, जयपुर, बनारस) की परम्पराओं की समालोचना।
२. निम्नलिखित लयकारियों को तीनताल, झपताल, रूपक, धमार, रास तथा शिखर में लिखना।
3/4, 1-1/2, 1-3/4, 4/5, 5/4 आदि।
३. निम्नलिखित की विस्तारपूर्वक परिभाषा। स्तुति, आमद, सलामी, स्त्री ठाठ, पुरुष ठाठ, करण, चाल, कसक - मसक, हाव-भाव, तत्कार में रेला, पल्टा, बांट, लड़ी चलन, प्रमलू, फरमाइशी चक्करदार, ठुमरी, त्रिवट, चतुरंग, अष्टपदी।
४. ठुमरी शब्द का स्वरूप, उत्पत्ति तथा विकास।
५. निम्नलिखित में से किसी एक पर निबन्ध :

- सा : लय, ताल और लयकारी की कथ्थक नृत्य में विशेषता ।
- रे : कथ्थक नृत्य की वेशभूषा के विभिन्न रूप ।
- ग : कृष्ण चरित्र का कथ्थक शैली पर प्रभाव।
- म : कथ्थक नृत्य पर मुस्लिम सभ्यता का प्रभाव।

- प : कथ्थक नृत्य में घुंघरू का महत्व।
- ध : कथ्थक नृत्य में पदंत की विशेषता ।

६. निम्नलिखित तालों में आमद, तिहाई (2 आवृत्ति) तोड़े, परन, चकरदार परन, फरमाईशी परन, कवित्त, आदि।
   गणेश ताल (21 मात्रा), रुद्रताल (11 मात्रा), अर्जुनताल (24)
७. नाट्यशास्त्र के व्याख्याकारों का विवेचन।
८. 'करण' क्या है ? 108 करणों में से पहले 10 करणों के नाम ।

क्रियात्मक :

१. गणेश स्तुति, दुर्गास्तुति तथा रामस्तुति ।
२. अपनी पसंद की ताल के अतिरिक्त गणेश, रुद्र, अर्जुन या अष्टमंगल में से किसी एक ताल में विशेष प्रदर्शन ।
३. ध्रुपद या अष्टपदी मे से किसी एक पर भाव नृत्य ।
४. गतभाव में दक्षता द्रौपदी चीर हरण, रामायण से जटायु मोक्ष या किसी अन्य प्रसिध्द प्रसंग पर परीक्षकों की अनुमति से गतभाव प्रस्तुत करना।
५. किसी प्रसिध्द ठुमरी के अतिरिक्त परीक्षक द्वारा गाई जाने वाली ठुमरी का भी भाव दर्शन ।
६. रसों पर आधारित गतभाव या पद पर भाव।
७. नायिका भेद पर विशेष अधिकार।
८. अपनी कोई रचना ।
९. सभी तालों में पढ़न्त ताल सहित ।
१०. स्वयं गा कर कोई रचना प्रस्तुत करना तथा तबले में बोलो को बजाना ।
११. छोटे बच्चों को सिखाने की क्षमता।

- **मंचप्रदर्शन :** स्वतंत्ररूप में विधिवत् मंचप्रदर्शन अनिवार्य (30 मिनट तक)

अलंकार द्वितीय वर्ष : कुल मौखिक – ३००
समय: ९० मिनिट + मंचप्रदर्शन ३० मिनिट प्रति छात्र

रास / अष्टमंगल / बसंत / लक्ष्मी

ताल में विशेष प्रदर्शन

मंच प्रदर्शन	ठाठ	पढन्त	नृत	तत्कार
	बंदिश अंदाज	ताल तरिका	अंग सफाई	तैयारी / लयकारी
१००	१० + १०	१० + १०	१० + १०	
	२०	२०	२०	२०

भाव अंग — उपज

गतभाव	नायक	नायिका	धृपद	नवरास	ठुमरी भाव	अपनी रचना
			अष्टपदी			
१०	१०	१०	१५	१०	१०	१०

विशेष ज्ञान — कुल प्रभाव

तबला बजाना	सिखाने की क्षमता	
१०	२०	१५

कुल अंक ३००